ISSN : 2581-8848

विशेषांक भाग – IV

जनवरी, 2026

हिंदी गीत और ग़ज़ल: विविध परिदृश्य

अतिथि संपादक

डॉ. दीपक तुपे

संपादक मंडल सदस्य

डॉ. आरिफ महात

डॉ. प्रदीप पाटील

संपादकीय

वस्तुतः हिंदी साहित्य की गीत और ग़ज़ल दो ऐसी सशक्त विधाएँ हैं; जो समय, समाज और मानवीय संवेदना के विविध पहलुओं को उजागर करती हैं। ये दोनों काव्य विधाएँ केवल भावनाओं की सूक्ष्म अनुभूति ही नहीं करती बल्कि सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक और अन्यान्य परिदृश्य को प्रभावी ढंग से रेखांकित करती हैं। बदलते समय के साथ गीत और ग़ज़लों के परिदृश्यों में विविधता पाई जाती है। हिंदी गीत की परंपरा प्रकृति, प्रेम, विरह, आनंद और लोक जीवन से भरी पड़ी है। हिंदी गीत एवं ग़ज़लों में आत्मानुभूति एवं मानवीय करुणा का गहन स्वर दिखाई देता है। इन दोनों विधाओं में सामाजिक सरोकार, षड्यंत्रकारी राजनीति, स्त्री वेदना, अकेलेपन की पीड़ा और सांस्कृतिक पतन का गहन स्वर अभिव्यक्त हो चुका है। हिंदी गीत और ग़ज़ल केवल भावुकता माध्यम नहीं बल्कि विचारों की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम रही हैं।

ग़ज़ल मूलतः फरसी काव्य विधा है। फारसी से उर्दू में आई ग़ज़ल का अर्थ प्रेमी-प्रेमिका का वार्तालाप माना जाता है। प्रारंभिक काल में ग़ज़ल प्रेम की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम थी, मगर समय के साथ उसमें अन्य विषय भी जुड़ गए। पहले ग़ज़ल माशूक, महबूब, हुस्न, साकी, सब तरक्की, पसंद अदब और बगावत तक सीमित थी, मगर आधुनिक काल में वह जनमानस की पीड़ा एक सशक्त माध्यम बन गई। शब्दकोशों के अनुसार ग़ज़ल का मतलब महबूब से बातें करना है। इसे अगर सच भी मान लिया जाए तो सवाल उठाता है कि महबूबा जनता क्यों नहीं हो सकती? ग़ज़ल का अर्थ अगर महबूब के हुस्न, जिस्म, शबाब, रूख, रूखसार, होंठ, जोबन, कमर की पैदाइश का वर्णन करना ही नहीं बल्कि जनमानस की पीड़ा का वर्णन करना भी है। हिंदी गीत एवं ग़ज़ल में प्रेम, दर्द, सौंदर्य के पारंपरिक विषयों के साथ-साथ सामाजिक विषमता, राजनीतिक विडंबना, व्यवस्था के प्रति आक्रोश, परिवर्तन की आकांक्षा और आम आदमी की गहरी पीड़ा का जीवंत दस्तावेज प्रस्तुत हुआ है। आज हिंदी गीत और ग़ज़ल जनचेतना के संवाहक रहे हैं। ये दोनों विधाएँ व्यापक जनसमुदाय तक पहुँचकर समसामयिक परिदृश्यों अंकन करती हैं। विविध मंच, रेडियो, टेलीविजन, विभिन्न चैनल, सोशल मीडिया और डिजिटल प्लेटफॉर्म ने हिंदी गीत और ग़ज़ल को नई ऊर्जा प्रदान की है। इन्हीं मंचों पर युवा रचनाकार पारंपरिक शिल्प को बनाए रखते हुए नए विषयों और नए भाषिक प्रयोगों के साथ अपनी प्रस्तुति दे रहे हैं। इससे गीत और ग़ज़ल की परंपरा निरंतर गतिशील बनी हुई है।

प्रस्तुत विशेषांक 'हिंदी गीत और ग़ज़लः विविध परिदृश्य' पर केंद्रित है; जो हमारी सांस्कृतिक चेतना और साहित्यिक समृद्धि का द्योतक है। कहना आवश्यक नहीं कि हिंदी गीत और ग़ज़ल पर केंद्रित यह विशेषांक मानवीय अनुभूति, संवेदना और विचारों का जीवंत दस्तावेज प्रस्तुत करता है। बदलते समय में भी हिंदी गीत और ग़ज़ल अपनी जड़ों से जुड़ी हुई हैं; जो समकालीन यथार्थ को प्रस्तुत करती है। प्रस्तुत विशेषांक में इन्हीं विचारों एवं संवेदनाओं की प्रखर पहल की गई है। इसमें संदेह नहीं कि 'हिंदी गीत और ग़ज़लः विविध परिदृश्य' विशेषांक हिंदी साहित्य की विरासत और अधिक सशक्त एवं प्रासंगिक बना देगा।

प्रस्तुत विशेषांक में अभिव्यक्त विचार अनुसंधाता के अपने हैं, जरूरी नहीं कि संपादक उनके विचारों से सहमत हो।

अतिथि संपादक,
डॉ. दीपक तुपे।

अनुक्रम

Sr. No.	Title of Article	Author Name	Page No.
1	21वीं सदीं की हिंदी कविताओं में किसानों का चित्रण	डॉ. पटेकर विश्वनाथ चंद्रकांत	1-4
2	'आजकल' पत्रिका में प्रकाशित गज़लों में चित्रित किसान विमर्श	प्रो. डॉ. सुनील बापू बनसोडे श्रीमती मलिका शाकुर पकाली	5-8
3	लोक साहित्य की प्रांसगिकता	प्रा. डॉ. उत्तम ओंकार येवले	9-12
4	ग़ज़ल में सामाजिक परिदृश्य : राहत इंदौरी के परिप्रेक्ष्य में	डॉ. किरण सदानंद भोसले	13-14
5	इक्कीसवीं सदी के उपन्यासों में चित्रित आदिवासी लोकगीतों का अध्ययन	प्रा. रविदास एस पाडवी	15-17
6	लोकगीतों में जीवन-मूल्य : साहित्य और संस्कृति के संदर्भ में	डॉ. प्रवीण तुलशीराम तुपे	18-21
7	हिंदी गज़लों में मानवीय मूल्य	डॉ. संतोष बबनराव माने	22-23
8	दुष्यंत कुमार की गजलों में प्रासंगिकता	प्रा. जेलीत आनंदराव कांबळे	24-27
9	हिंदी फिल्मों में गीत और ग़ज़ल का सांस्कृतिक, कथात्मक और भावनात्मक महत्व: 1950-1980 के 'स्वर्ण युग' का गहन विश्लेषण	डॉ. रशिद नजरूददीन तहसिलदार	28-31
10	साहित्य, सिनेमा और मीडिया : अंतर्संबंध	श्री. निलेश वसंतराव जाधव	32-35
11	आयदान आत्मकथा : एक सांस्कृतिक परिदृश्य	डॉ. प्राजक्ता अंकुश रेणुसे	36-38
12	हिंदी साहित्य में ग़ज़ल परंपरा और दुष्यंतकुमार का योगदान	पूनम कुमार बरगाले	39-41
13	बैकुंठपुर में बचपन संस्मरण में गीत	प्रदीप निवृत्ति बेनके	42-44
14	सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में हिंदी गजल की दिशा	डॉ. हाशमबेग मिर्झा	45-47
15	समकालीन हिंदी ग़ज़लों में चेतना के विविध आयाम	डॉ. एन. बी. एकिले	48-51
16	हिंदी गजल साहित्य में डॉ आरिफ महात का योगदान	मनशेट्टी लक्ष्मी किसनराव	52-54
17	हिंदी फिल्मी गीतकार एवं ग़ज़लकार	सागर जिवराज थोरात	55-57
18	हिंदी ग़ज़ल की अवधारणा एवं विकास	सुमेध जालिंदर इंगले	58-60
19	डॉ. जेबा रशीद के 'रिश्ते क्या कहलाते हैं' कहानी संग्रह में चित्रित महिलाओं की मनोदशा	प्रो. (डॉ) हाशमबेग मिर्झा, प्रा. रहिसा या. मिर्झा	61-66
20	दुष्यन्त कुमार के ग़ज़लों में यर्थाथ बोध	काजी नसरीन खमरोद्दीन	67-69